नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

## शेख हसीना को मृत्युदंड : न्याय या प्रतिशोध?

बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध ट्रिब्यूनल द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को मानवता के विरुद्ध अपराधों के लिए मृत्युदंड सुनाया जाना पूरे दक्षिण एशिया में भूचाल लाने वाला फैसला है. यह निर्णय केवल एक कानूनी प्रक्रिया का अंत नहीं है, बल्कि बांग्लादेश की राजनीति में एक नए दौर की शुरुआत है,जिसमें न्याय और राजनीतिक प्रतिशोध के बीच की रेखा और अधिक धुंधली होती दिख रही है.

2024 के छात्र-नेतृत्व वाले विद्रोह को कठोरता से दबाने, 1,400 से अधिक लोगों की कथित हत्या और व्यापक मानवाधिकार उल्लंघनों के आरोपों पर ट्रिब्यूनल ने हसीना को 'मास्टरमाइंड' करार दिया है. लेकिन इस फैसले की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि यह निर्णय अनुपस्थिति में दिया गया है, जबकि हसीना पिछले साल सत्ता से हटने के बाद भारत में निर्वासन में हैं. सवाल यह है कि बिना आरोपों का प्रत्यक्ष सामना किए, बिना क्रॉस-एग्ज़ामिनेशन के सुनाया गया यह फैसला कितना न्यायसंगत माना जा सकता है?

शेख हसीना ने इसे राजनीति से प्रेरित और पूर्वनिर्धारित करार दिया है. उनकी प्रतिक्रिया इस बात की ओर संकेत करती है कि बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन केवल शासन का बदलाव नहीं था. यह एक व्यापक राजनीतिक पुनर्संरचना है, जिसकी जड़ें गहरी नाराजगियों, सामाजिक उथल-पुथल और दशकों की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विताओं में हैं. दूसरी ओर, अंतरिम सरकार और उसके प्रमुख मुहम्मद यूनुस का तर्क है कि 'कानून से ऊपर कोई नहीं.' यह संदेश देश के भीतर सुधार और जवाबदेही का संकेत माना जा रहा है. परंतु अंतरराष्ट्रीय मंच पर इस फैसले की विश्वसनीयता को लेकर गंभीर सवाल उठे हैं. संयुक्त राष्ट्र ने मृत्युदंड का विरोध करते हुए बांग्लादेश से निष्पक्ष सुनवाई सुनिश्चित करने की अपील की है. यह प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है, क्योंकि लोकतांत्रिक संक्रमण के दौर से गुजर रहे बांग्लादेश के लिए वैश्विक मान्यता और भरोसा अनिवार्य है. समान रूप से महत्वपूर्ण है भारत का रुख, जो इस संवेदनशील मामले में केवल 'फैसले को नोट करने' तक सीमित है. बांग्लादेश की सरकार ने भारत से प्रत्यर्पण की मांग की है, पर भारत के सामने अब एक जटिल कूटनीतिक संतुलन साधने की चुनौती है. हसीना को सौंपना या न सौंपना,दोनों ही कदम भारत-बांग्लादेश संबंधों पर गहरा प्रभाव डालेंगे.

दरअसल,देश के भीतर इसका असर और भी तीव्र हो सकता है. अवामी लीग के समर्थकों में व्यापक आक्रोश और संभावित हिंसा की आशंका है. यदि राजनीतिक तनाव भड़कता है, तो यह केवल बांग्लादेश की आंतरिक स्थिरता को ही नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र की सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है. भारत, म्यांमार और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों पर भी इसका असर पड़ना तय है. आखिरकार, किसी भी राष्ट्र में न्याय तब ही विश्वसनीय माना जाता है जब उसमें राजनीतिक बदले की बू न आए. मृत्युदंड जैसे निर्णय केवल कानून का पालन ही नहीं बल्कि नैतिक वैधता भी मांगते हैं.

शेख हसीना की विवादित विरासत, कठोर शासन शैली और आरोपों के बावजूद यह सवाल बना रहेगा कि क्या यह फैसला वास्तविक न्याय है, या एक नए सत्ता ढांचे द्वारा पुराने शासन का हिसाब चुकाने की कोशिश. बहरहाल, अब दुनिया की निगाहें इस बात पर टिक गई हैं कि बांग्लादेश न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ता है, या प्रतिशोध की राजनीति उसे फिर किसी नई उथल-पुथल की ओर धकेल देती है.

# घरेलू पिचों पर हम बार-बार क्यों हारते हैं

## इसकी वजह क्रिकेट में घुसी राजनीति

कोलकाता में वही हुआ, जो मुंबई में 2024 में हुआ था. मुंबई टेस्ट में भारत न्यूजीलैंड के विरुद्ध 147 रन का लक्ष्य हासिल न कर सका था और 25 रन से हार गया था. कोलकाता में दक्षिण अफ्रीका ने इससे भी कम का टारगेट रखा था, मात्र 124 रन का, लेकिन हमारे बैटर्स उसे भी पार न कर सके और टीम को 30 रनों से शर्मनाक हार का कड़वा घूंट पीना पड़ा. रविवार को भारत की अपने ही घरेलू मैदानों पर दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड व ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह लगातार चौथी हार है.

**एक** दौर था जब हम अपने स्पिनिंग ट्रैक पर शेर हुआ करते थे, हर टीम को मुकाबला करने के लिए भी लोहे के चने चवाने पड़ते थे. लेकिन अब स्थिति बदल गई है. हमारी टीम चार स्थापित स्पिनर्स- रविंद्र जडेजा, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल व वाशिंगटन सुंदर को लेकर मैदान में उतरती है और अनजान ऑफ स्पिनर साइमन हारमर की घुमाव व उछाल लेती गेंदों के सामने नतमस्तक हो जाती है. टीम के कोच गौतम गंभीर कहते हैं कि 'पिच एकदम वैसी ही थी, जैसा हम चाहते थे और इसमें क्यूरेटर बहुत अधिक मददगार रहा'.

सवाल उठता है जब सब कुछ आपकी मर्जी के मुताबिक हुआ, तो फिर इस शर्मनाक पराजय का दोषी कौन है? गंभीर ने घुमा फिराकर बैटर्स को जिम्मेदार माना है कि उनके पास ऐसे विकेट पर खेलने की तकनीक नहीं थी. लेकिन अगर गौर से देखा जाए तो इसके लिए जिम्मेदार स्वयं गंभीर और मुख्य चयनकर्ता अजित आगरकर हैं, जिनकी वजह से भारतीय क्रिकेट में राजनीति अधिक और खेल कम हो रहा है.

टेस्ट मैच स्पेशलिस्ट बैटर्स व स्पेशलिस्ट गेंदबाजों और 1 या 2 ऑल-राउंडर्स की बदौलत जीते जाते हैं. लेकिन गंभीर की मानसिकता टी-20 वाली है, जिसमें ऐसे खिलाड़ियों से काम चल जाता है, जो थोड़ा सा बल्ला तेजी से चला लेते हैं व हाथ घुमाकर 1-2 ओवर भी निकाल देते हैं, बतौर कप्तान व कोच उन्होंने कोलकाता नाईट राइडर्स को 2 आईपीएल खिताब जिताने में मदद इसी ट्रिक से की थी.

**सारा ध्यान आईपीएल पर** इसी सोच के तहत उन्होंने कोलकाता में द. अफ्रीका के विरुद्ध टीम में मात्र 3 स्पेशलिस्ट बैटर्स यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल व शुभमन गिल (जो चोटिल होने की वजह से मैच में केवल 3 गेंद ही खेल सके) और 2 स्पेशलिस्ट गेंदबाज (बुमराह व सिराज) को लेकर खेले. शेष या तो बोलिंग ऑल-राउंडर्स थे या विकेटकीपर ऑल-राउंडर्स, जाहिर है इन ऑल-राउंडर्स में कोई भी गैरी सोबर्स, कपिल देव या जैक कालिस के स्तर का नहीं है, जो टेस्ट मानकों पर निरंतरता के साथ खरा उतर सके. इसलिए स्पिन लेती पिचों पर हमारा स्तर गिरता जा रहा है. विशेषज्ञों का कहना है कि अगर सारा ध्यान आईपीएल पर ही फोकस किया जाएगा तो टेस्ट में स्तर बद से बदतर होता जाएगा.

इस समय हमारे पास अंतरराष्ट्रीय स्तर के तेज गेंदबाज मौजूद हैं, जो किसी भी प्रकार की पिच पर विकेट लेने में सक्षम हैं, तो फिर स्पिनिंग ट्रैक बनाने का मोह किसलिए है? अगर आपके पास इतने जबरदस्त तेज गेंदबाज मौजूद हैं, तो निम्नस्तरीय स्पिनिंग ट्रैक की बजाय स्पोर्टिंग पिच तैयार करनी चाहिए, ऐसा लगता नहीं कि विराट कोहली व रोहित शर्मा ने टेस्ट से संन्यास अपनी स्वतंत्र मर्जी से लिया था. प्रतीत होता है कि उन पर ऐसा करने के लिए दबाव बनाया गया था कि खुद चले जाओ वर्ना तुम्हें टीम में चुना नहीं जाएगा.

जिस तरह से टी-20 विश्व कप व चैंपियंस ट्रॉफी जिताने वाले शर्मा को ऑस्ट्रेलिया के दौरे से पहले वनडे टीम की कप्तानी से हटाया गया और जो गंदा खेल शमी के खिलाफ खेला जा रहा है, उससे इसी धारणा को बल मिलता है. हद तो यह है कि जब कोलकाता टेस्ट चल रहा था तो कमेंटेटर्स लंच के दौरान आईपीएल की टीमों पर ही चर्चा कर रहे थे.

-डॉ. अनिता राठौर

दिल्ली डायरी

## बिहार चुनाव परिणाम से चौंक गए राजनीतिक दल

प्रवेश कुमार मिश्र

**बिहार** विधानसभा चुनाव में राजग की अप्रत्याशित विजय ने न सिर्फ इंडिया समूह में शामिल दलों के रणनीतिकारों को चौंका दिया बल्कि दिल्ली से बिहार को देख रहे भाजपाई रणनीतिकार भी हैरान रह गए. एकतरफा चुनाव परिणाम को देखकर ज्यादातर राजनेताओं ने हैरानी जताते हुए कहा कि इस तरह के परिणाम का अनुमान प्रचार अभियान के दौरान दोनों पक्षों के भीड़ को देखकर नहीं लगाया जा सकता था. हालांकि भाजपाई लोगों ने इस परिणाम को कथित जंगलराज की अस्वीकृति और नीतीश-मोदी की जोड़ी के प्रति आम मतदाताओं का विश्वास का प्रतीक माना है वहीं कांग्रेस व राजद के नेताओं ने इसे सुनियोजित रणनीति के तहत मतदाताओं को दिए लोकलुभावन प्रलोभन का परिणाम माना है. चौंकाने वाले परिणाम पर राजनीतिक दलों के अलावा स्वतंत्र राजनीतिक विश्लेषक भी हैरान रहे.

### बिखरने लगा लालू परिवार सामने आई अंतरकलह

राजद का प्रथम परिवार यानी लालू प्रसाद यादव का परिवार इन दिनों आपसी कलह के कारण सुर्खियों में है. विधानसभा चुनाव के पहले लालू यादव द्वारा अपने बड़े पुत्र तेजप्रताप को उनके व्यक्तिगत निर्णय से आहत होकर परिवार से अलग किया और वे अलग पार्टी बनाकर चुनाव लड़े. चुनाव परिणाम के बाद लालू को अपनी किडनी देकर जीवनदान देने वाली बेटी रोहिणी के साथ तेजस्वी यादव द्वारा की गई बदसलूकी सुर्खियों में है. रोहिणी ने जिस तरह से सार्वजनिक तौर पर परिवार के अंदर के हालात का चित्रण किया है उसको लेकर राजनीतिक जगत के अलावा भी लालू प्रसाद यादव परिवार के अंतर्कलह पर चर्चा होने लगी है. कहा जा रहा है कि क्या लालू परिवार संजय यादव जैसे बाहरी लोगों के कारण बिखराव के कगार पर है?

### नीतीश कुमार ने बचा ली अपनी कुर्सी

बिहार विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी बनने के बावजूद भाजपा एक बार फिर नीतीश कुमार की रणनीति के आगे झुकते हुए उन्हें मुख्यमंत्री पद देने पर सहमत होते दिख रही है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि भाजपाई रणनीतिकार इस बार नीतीश के बजाय भाजपा के किसी वरिष्ठ नेता के नेतृत्व में बिहार सरकार का गठन कराने के प्रयास में लगे हुए थे. इसके लिए बाकायदा रणनीतिक प्रयास भी किया गया. चर्चा है कि नीतीश कुमार की सेहत का हवाला देकर भाजपाई वार्ताकारों ने जदयू के सामने कई प्रस्ताव रखकर दबाव बनाने का प्रयास किया. लेकिन सहयोगी दल के दबाव को अनसुना करते हुए नीतीश कुमार ने खुद मोर्चा संभाला और भाजपाई रणनीतिकारों को अपनी शर्तों के आगे झुकने को बाध्य कर दिया है. माना जा रहा है कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही भाजपा व अन्य राजग सहयोगी नई सरकार में शामिल होकर भविष्य में बनने वाली परिस्थितियों का इंतजार करेंगे.

### हार का ठीकरा चुनाव आयोग पर

लगातार चुनावी हार के बावजूद कांग्रेसी रणनीतिकार अपनी गलतियों से सबक सीखने के बजाय हार के दूसरे कारणों को आगे करके अपनी रणनीति का बचाव करते दिख रहे हैं. बिहार विधानसभा चुनाव में मिली करारी मात के बाद यह अनुमान लगाया जा रहा था कि पार्टी रणनीतिकार अपनी आंतरिक कमियों पर बृहद व पारदर्शी परीक्षण की प्रक्रिया को बढ़ाएंगे लेकिन मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा व दिल्ली हार के बाद जिस तरह से ईवीएम, चुनाव आयोग व भाजपा की लोकलुभावन घोषणा आदि को जिम्मेदार ठहराकर गलतियों से सबक नहीं सीखा गया ठीक उसी तरह बिहार हार पर भी पार्टी के ढुलमुल रवैया ने हैरान कर दिया है. इस तरह से अपनी कमियों की लगातार अनदेखी के कारण कांग्रेस के अंदर एक बड़े खेमे में नाराजगी दिखाई दे रही है. चर्चा है कि पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं ने व्यक्तिगत रूप से पूर्व पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र लिखकर लगातार हार के सांगठनिक कारणों पर पर्दा डालने की कोशिश करने वाले जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई की मांग की है.

## कब तक लगाया जाएगा वोट चोरी का आरोप

*कांग्रेस ने वोट चोरी का जो आरोप लगाया उनका जनता पर असर नहीं पड़ा. सत्ता में बदलाव या एंटी इनकम्बेंसी का अनुमान गलत साबित हुआ. अब कांग्रेस को चाहिए कि एक ही आरोप बार-बार लगाने की बजाय वह अपने संगठन को मजबूत बनाए.*

**बिहार** विधानसभा चुनाव में पराजय के बाद कांग्रेस ने फिर वोट चोरी का आरोप लगाया है. राहुल गांधी ने कहा कि शुरुआत से ही चुनाव निष्पक्ष नहीं थे. चुनाव आयोग की बीजेपी से मिलीभगत का आरोप कांग्रेस आखिर कब तक लगाएगी और उससे क्या हासिल होगा? विपक्ष की अन्य पार्टियां इससे कितनी सहमत हैं? डीएमके प्रमुख व तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने चुनाव आयोग की आलोचना तो की लेकिन साथ ही यह भी कहा कि स्पष्ट राजनीतिक संदेश, कुशल राजनीतिक प्रबंधन, मजबूत गठबंधन व जनकल्याण के कदमों की वजह से एनडीए की जीत हुई. कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बिहार की जनता के फैसले का सम्मान करते हुए कहा कि संविधान व लोकतंत्र की रक्षा करते हुए हमें चुनाव नतीजों का अध्ययन कर समझने की आवश्यकता है. बिहार में चुनाव के पूर्व मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण से भी नतीजों पर असर पड़ा. सच तो यह है कि बीजेपी, जदयू और लोजपा की चुनाव रणनीति बहुत सधी हुई व संगठित थी. एनडीए के नेताओं ने खुद को चुनाव में पूरी तरह झोंक दिया था. महागठबंधन में तालमेल और आपसी विश्वास की कमी थी. खुद राजद में एकजुटता नहीं थी. लालू परिवार के सदस्यों का आपस में विवाद था जो अब खुलकर सामने आ गया है. कांग्रेस ने वोट चोरी का जो आरोप लगाया उनका जनता पर असर नहीं पड़ा. सत्ता में बदलाव या एंटी इनकम्बेंसी का अनुमान गलत साबित हुआ. अब कांग्रेस को चाहिए कि एक ही आरोप बार-बार लगाने की बजाय वह अपने संगठन को मजबूत बनाए और अपनी रणनीति नए सिरे से तय करे. जनता से संवाद की अपनी शैली को विश्वसनीय बनाए, आगे कितने ही चुनाव आएंगे जिनके लिए बेहतर तैयारी की जरूरत है. कांग्रेस उन संगठनात्मक तरीकों को सीखे जो बीजेपी के पास हैं. ममता बनर्जी ने भी तो लेफ्ट पार्टियों के तौर तरीके समझने के बाद बंगाल में उनका किला तोड़ा था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

## टांय-टांय फिस्स हो गए पीके, एक भी सीट पर नहीं जीते

**पड़ोसी** ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने व्यर्थ का दुस्साहस या मिसएडवेंचर किया. वह चुनावी थ्योरी बनाने तक ठीक थे, प्रैक्टिकल में जीरो थे. चुनाव में उनकी जनसुराज पार्टी का खाता तक नहीं खुला. पिच पर आते ही क्लीन बोल्ड हो गए.'

हमने कहा, 'क्रिकेट के समान चुनाव भी गेम ऑफ चान्स रहता है. या तो खिलाड़ी सेंचुरी मारता है या जीरो पर आउट हो जाता है. प्रशांत किशोर न तो बिहार की जनता को समझे और न जनता उन्हें समझ पाई. उन्होंने जाति समीकरण साधने की बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को मुद्दा बनाया. बीजेपी पर आरोप लगाया कि वह उनकी जनसुराज पार्टी के प्रत्याशियों को प्रलोभन देकर नाम वापस लेने के लिए कह रही है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, बिहार के ग्रामीण लोगों तक पीके की पार्टी पहुंची ही नहीं. लोगों को

उनकी पार्टी का चुनाव चिन्ह और उम्मीदवार का नाम तक मालूम नहीं था. ऐसे में वोट कहां से मिलते? राज्य में कोई आधार नहीं था फिर भी 240 सीटों पर चुनाव लड़ना उनकी सनक नहीं तो और क्या था! यह कुछ ऐसी बात थी कि बौना आकाश छूने चला! मैदानी राजनीति का कोई अनुभव नहीं था लेकिन चुनाव लड़ने की मस्ती चढ़ी. हवाई किला या ताश का महल टिकता नहीं, फूंक मारने से गिर जाता है.

हमने कहा, 'प्रशांत किशोर खुद चुनाव नहीं लड़े. उन्हें लगा कि राघोपुर से चुनाव में उतरेंगे तो वहीं फंसकर रह जाएंगे और पार्टी के प्रचार के लिए घूम नहीं पाएंगे. मोदी और शरद पवार ने कभी ऐसा नहीं किया. वह हमेशा चुनाव लड़े. यदि सेनापति ही पीछे हट जाए तो फौज क्या लड़ेगी? पीके नई राजनीति का विकल्प देने की कोशिश कर रहे थे लेकिन मतदाताओं ने उनके संकल्प को विफल कर दिया. अब कोई भी पार्टी उनसे चुनावी रणनीति नहीं बनवाएगी. जो खुद एक सीट जीतने की औकात नहीं रखता, वह दूसरों को क्या जिताएगा? उनकी पोल स्ट्रेटेजी की दुकान अब बंद ही समझो!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

### CROSS WORD 12085 - डॉ. सागर खादीवाला

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | | 3 | 4 | ■ | 5 | 6 |
| 7 | | ■ | 8 | | 9 | | |
| | ■ | 10 | | | | ■ | |
| 11 | 12 | | | ■ | ■ | 13 | ■ |
| ■ | 14 | | ■ | 15 | 16 | | 17 |
| 18 | ■ | 19 | | | | ■ | |
| 20 | 21 | | ■ | 22 | | 23 | ■ |
| 24 | | ■ | 25 | | ■ | 26 | |

**बाएं से दाएं**
1. विभूषित, शोभा देने या बढ़ाने वाला (सं.) 5. भविष्य में आने वाला, आने वाला समय 7. बीता हुआ या आने वाला दिन, मशीन 8. भीगा हुआ, आर्द्र (उर्दू) 10. एक राय, जिसकी राय दूसरे से मिलती हो 11. सीख, उपदेश, अच्छी राय (उर्दू) 14. शालि जिसमें से चावल निकलता है 15. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसके एक ओर रोएं उभरे होते हैं 19. ठंडापन, सदर्दी, जड़ता 20. एक प्रकार का हरिण 22. रूठे हुए को प्रसन्न करना 24. कोई शब्द या बात बार-बार बोलने का काम 25. लंबा तथा नुकीला कांटा 26. तेज, तेज नोक वाला, तीव्र, प्रखर

**ऊपर से नीचे**
1. शोक का कारण (सं.) 2. ललाट, माथा 3. अधीनस्थ कर्मचारी, सहकारी (उर्दू) 4. कोमल 5. पानी में उबालकर पकाया हुआ चावल 6. बहादुरी 9. बात, बत्तख 10. सहने या बरदाश्त करने वाला 12. सरल, जो टेढ़ा न हो, भोलाभाला निष्कपट 13. गृह, मकान, पवित्र तीर्थ 15. बारीक सूत से बना बारीक कपड़ा 16. खाते में दर्ज करना 17. लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी 18. परकोटा, चारों ओर से घेरने वाली दीवार 21. किनारा, कूल 23. दोहता, लड़की का लड़का

**Solution 12084**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | ■ | प्र | सा | र | क | ■ | प |
| व | क्त | ■ | व | ■ | न | ख | रा |
| सा | ■ | वि | धा | य | क | ■ | म |
| न | शे | म | न | ■ | ■ | फ | र्श |
| ■ | फा | ल | ■ | स | म | ■ | ■ |
| ब | ली | ■ | पा | र | द | र्श | क |
| श | ■ | ■ | दु | का | न | ■ | पू |
| क | हा | नी | का | र | ■ | दू | र |

## ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्योंमें ख्याति प्राप्त होगी, नई योजनाओं में विचार विमर्श होगा, वर्ष के मध्य में भूमि भवन आदि के मामलों में सफलता मिलेगी, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना पड़ेगी, निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार के क्षेत्र में भागदौड़ रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की राजनीति के क्षेत्र में विवाद की स्थिति आयेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना होगी, निकट संबंधी के कारण तनाव रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि कार्यो में सफलता मिलेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यापार में भागदौड़ अधिक करना होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आपसी व्यक्तियों से तनाव रह सकता है.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, मिलनसार, होगा, यदि धनु हुई तो सुन्दर, एवं व्यक्तित्व मधुर होगा, चालाकी का अभाव रहेगा, किसी भी कार्य को सूझबूझ और विवेक से करेगा, न्यायप्रिय और माता पिता का भक्त होगा.

**मेष**- अनुभवी लोगों का साथ केरियर की नई दिशा देने में सहायक रहेगा, कामकाज के प्रति उत्साह रहेगा, पारिवारिक सुख शांति रहेगी, अभीष्ट कार्यो की प्राप्ति होगी.

**वृषभ**- झूठ बोलकर खुद मुश्किल में पड़ जायेंगे, अनावश्यक विवाद तनाव का कारण बनेगा, कामकाज में उदासीनता बनी रहेगी, सोचे हुये कार्यो में बाधा आयेगी.

**मिथुन**- कार्यक्षेत्र की उलझनें धीरे धीरे दूर होने लगेंगी, धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, मानसिक सुख एवं संतोष रहेगा, इच्छानुसार कार्य बनेंगे.

**कर्क**- कामकाज को लेकर सहयोगियों से अनबन हो सकती है, अधिकारियों के विवाद से बचना चाहिये, मान सम्मान से प्रसन्नता रहेगी, नया खर्च सामने आयेगा.

**सिंह**- धन की कमी से रूके कार्य फिर से शुरू हो सकते हैं, आकस्मिक अतिथि आगमन से खर्च की व्यवस्था करनी होगी, परिश्रम एवं दौड़धूप अधिक करना होगा.

**कन्या**- भाग्य भरोसे रहे तो अच्छा अवसर हाथ से निकल जायेगा, कामकाज में अड़चनें आयेंगी, यात्रा में परेशानी का अनुभव होगा, सावधानी बांछनीय है.

**तुला**- तनाव की स्थिति में परिवार का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य नरम गरम रह सकता है, व्यवसायिक दिनचर्या में व्यस्त रहेंगे, समय पर काम न होने से मन दुखी होगा.

**वृश्चिक**- निजी कार्यो को पूरा करने में परेशानी होगी, नई जबावदारी संभावलना पड़ेगी, साहसक प्रयत्न से महत्वपूर्ण कार्यो की पूर्ति होगी, मानसिक सुख संतोष रहेगा.

**धनु**- बदले माहौल में खुद को ढालना मुश्किल होगा, वैभव पर खर्च की संभावना है, शत्रु पक्ष पर सफलता मिलेगी, मानसिक शांति बनी रहेगी.

**मकर**- दुविधा को छोड़कर काम में जुट जायें, सफलता मिलेगी, जोखिम के कार्यो से दूर रहें, वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा, सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी

**कुम्भ**- भाग्यवर्धक अवसर हाथ में आ सकते हैं, संतान पक्ष के कारण मानसिक कष्ट होगा, लेखन, अध्ययन, में सफलता मिलेगी, राजनैतिक संलग्नता बनी रहेगी.

**मीन**- जोखिम के कार्यो में रूचि बढेगी, दिखावे के कारण कर्ज की समस्या बन सकती है, विरोधी वर्ग के विवाद से बचें, स्वास्थ्य का ध्यान रख कार्य करना हितकर रहेगा.

### उदयकालीन ग्रह चाल

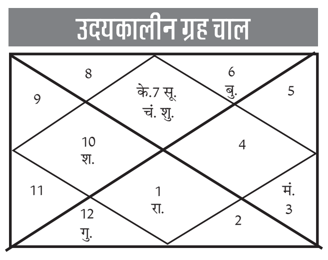


### पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण चर्तुदशी बुधवासरे दिन 8/54, स्वाती नक्षत्रे प्रातः 8/12, सौभाग्य योगे दिन 10/0, शकुनि करणे सू.उ. 6/38, सू.अ. 5/22, चन्द्रचार तुला रात 4/7 से वृश्चिक, पर्व- श्राद्ध अमावस्या, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

### व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण चर्तुदशी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से अरहर मूंग, मोठ, जौ, उडद, मं तेजी होगी, बिनौला, घी, तेल, में भी समता रहेगी, रूई, कपास में मंदी का योग है, भाग्यांक 3975 है.

### SUDOKU 7217

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | 3 | 7 | | 1 | 5 | 4 | | 9 |
| | 8 | | | | | | 2 | |
| | | 1 | | 4 | 8 | | | 6 |
| | 6 | | | 9 | 7 | 1 | | |
| 7 | 2 | | | | | | 5 | 3 |
| | | 5 | 6 | 3 | | | 9 | |
| 5 | | | 8 | 2 | | 3 | | |
| | 4 | | | | | | 7 | |
| 1 | | 3 | 7 | 5 | | 2 | 6 | 8 |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7216

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 9 | 4 | 1 | 7 | 2 | 6 | 3 | 8 |
| 6 | 8 | 1 | 4 | 3 | 5 | 2 | 7 | 9 |
| 2 | 3 | 7 | 8 | 9 | 6 | 1 | 4 | 5 |
| 9 | 2 | 3 | 7 | 5 | 1 | 4 | 8 | 6 |
| 4 | 7 | 6 | 9 | 2 | 8 | 5 | 1 | 3 |
| 1 | 5 | 8 | 3 | 6 | 4 | 9 | 2 | 7 |
| 8 | 6 | 2 | 5 | 4 | 3 | 7 | 9 | 1 |
| 7 | 1 | 5 | 2 | 8 | 9 | 3 | 6 | 4 |
| 3 | 4 | 9 | 6 | 1 | 7 | 8 | 5 | 2 |